IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यकालीन भारत में भूगोल एवं पर्यावरण

1 रेनू
शोधार्थी, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा, हरियाणा
2 डॉक्टर नीलम रानी
सहायक प्रोफेसर, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा, हरियाणा

सारांश :

मध्यकालीन भारत का भौगोलिक अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है जो इस काल की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना को समझने में सहायक है। भौगोलिक परिस्थितियाँ किसी भी राष्ट्र के विकास को प्रभावित करती हैं, और भारत का विशिष्ट भूगोल, जिसमें हिमालय, नदियाँ, मैदान, रेगिस्तान और समुद्र तट शामिल हैं, यहाँ के जीवन और समाज पर गहरा प्रभाव डालता है। हिमालय भारत की सुरक्षा और विदेशी आक्रमणों के मार्ग में प्रमुख भूमिका निभाता था, जबकि सिंधु-गंगा के मैदानों ने उपजाऊ भूमि और कृषि को बढ़ावा दिया।मध्यकालीन भारत के भूगोल को विदेशी यात्रियों के वृतांतों ने महत्वपूर्ण रूप से दर्ज किया है। उन्होंने यहाँ की जलवायु, व्यापार मार्ग, नगरों और प्राकृतिक संसाधनों का विस्तृत वर्णन किया। ये यात्राएँ भारतीय समाज और भूगोल के विविध पहलुओं को सामने लाती हैं। मुगल साम्राज्य के दौरान कृषि राजस्व का प्रमुख साधन था, और भूमि सुधारों के साथ सिंचाई सुविधाओं का विकास किया गया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी जागरूकता देखी गई, जिसमें पेड़ों की कटाई और जानवरों के शिकार पर प्रतिबंध शामिल था। गुरु जंभेश्वर द्वारा शुरू किया गया बिश्नोई आंदोलन पर्यावरण संरक्षण का एक अद्वितीय उदाहरण था। मध्यकालीन भारत का भूगोल न केवल प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों से प्रभावित था, बल्कि इसका दूरगामी प्रभाव राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर भी पड़ा, जिसने इस युग को विशिष्ट बनाया।

मूल शब्द
भौगोलिक, पर्यावरण, हिमालय, मैदान, समाज, पेड़, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, जलवायु, राजधानी, महामारी, मैदान, रेगिस्तान, सिंधु, गंगा ।

भूमिका

मध्यकालीन भारत का भौगोलिक वर्णन एक विशाल व समृद्ध विषय है। जो इस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक संरचना और संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। किसी भी राष्ट्र को उसकी भौगोलिक दशा प्रभावित करती है। जलवायु मनुष्य की भोजन संबंधी तथा अन्य आवश्यकताओं को निर्धारित करती है । भूमि, सागर तथा पर्वतों के प्राकृतिक लक्षण किसी क्षेत्र में रहने वाले लोगों को प्रभावित करते हैं । आस- पास का प्राकृतिक वातावरण वहां रहने वाले मनुष्य को प्रभावित करता है। संतोषभक बंदरगाहों के साथ समुद्र तट की मौजूदगी सीमाओं द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा अथवा उनकी अन्य भागों से अलग- थलग कर देने जैसे प्रभाव उनके चरित्र, उनके क्रियाकलापों का अन्य राष्ट्रों से उनके संपर्कों का और इस प्रकार उन पर पड़ने वाले विदेशी प्रभाव का निर्धारण करते हैं।[1] तत्कालीन भौगोलिक अवस्था के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी विदेशी यात्रियों के वृतांत से होती है। इन यात्रियों के वृतांतों में भारत का भौगोलिक परिचय मुगल साम्राज्य के विभिन्न प्रांतो का वर्णन, साम्राज्य की सीमा, भारत की विभिन्न फसले, पशु- पक्षी, जलवायु, विभिन्न नगरों तथा मार्गों का वर्णन दिया है।[2] विदेशी यात्रियों के वृतांत में इस विषय पर अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं क्योंकि उन्हें अपनी यात्रा के दौरान भारतीय समाज और भूगोल के विभिन्न पहलुओं को हमारे सामने लाते हैं। जिनमें जंगल, पर्वत, नदियां, मरुस्थल, व्यापारिक

[1] हसन, इब्न, मुगल साम्राज्य का केंद्रीय ढांचा, अनु. कृपालचंद यादव, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 22

[2] सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1556– 1627, पाठक पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43

मार्ग आदि शामिल है। जब कोई जीव जन्म लेता है, उसके बाद ऐसा लगता है कि वह स्वतंत्र है, लेकिन वह प्रकृति से धिरा हुआ है। उसका भाग्य उसे देश के वातावरण द्वारा निश्चित किया जाता है। किसी भी देश को जानने व समझने से पहले उसे देश का पर्यावरण इतिहास व भौगोलिक स्थिति को जानना समझना जरूरी है। हिंदुस्तान पहली दूसरी और तीसरी मौसमों में स्थित है।[3] विश्व में काफी सारे देश का इतिहास हमने पढा है, लेकिन भारत जैसी भौगोलिक स्थिति शायद ही अन्य किसी देश की होगी। भारतीय उपमहाद्वीप उतना ही बड़ा है जितना बड़ा रूस के बिना यूरोप है। मध्यकाल में यह उपमहाद्वीप तीन भागों में बांटा था भारत, नेपाल और भूटान। इसका अधिकांश भाग उष्ण कटिबंध में पड़ता है।[4] हिंदुस्तान का साम्राज्य विस्तृत है, और संपन्न है इसके दक्षिण पूर्व और पश्चिम में महासमुंदर है और इसके उत्तर में काबूल, गजनी और कंधार हैं। हिंदुस्तान की राजधानी दिल्ली है।[5]

भौगोलिक दृष्टिकोण

भारत को भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से चार भागों में बांटा गया है। विस्तृत पर्वतीय प्रदेश, सिंधु और गंगा के मैदान, रेगिस्तान क्षेत्र व दक्षिणी प्रायद्विप। हिमालय की तीन श्रृंखलाएं हैं। जो वह लगभग एक जैसे क्षेत्र में फैले हुए हैं। उनके बीच पहाड़ व घाटिया है। इनमें कश्मीर व कल्लू जैसी कुछ घाटिया उपजाऊ व विशाल है।[6] हिमालय पर्वत बहुत विशाल है। यह उत्तर भारत की नदियों का उद्गम स्थल है। जिसके ऊपर से आना- जाना असंभव- सा लगता है।वह भारत की पूर्वोत्तर व पश्चिमोत्तर सीमा की रक्षा करता है। हिमालय की मुख्य दीवार पश्चिमोत्तर कौने पर टूटी हुई है। इसी दर्रे से काबुल नदी भारत में प्रवेश करती है। यही से हिमालय दक्षिण से जुड़ा है। ये वो दर्रे हैं। जहां से विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत में प्रवेश किया जैसे खैबर, बोलन आदि। इन दर्रे वाले भाग को छोड़कर संपूर्ण हिमालय हमारी रक्षा करता है मध्यकालीन भारत एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। जिसमें उपजाऊ एवं सुंदर घाटिया,मैदान,पर्वत,शीत जलवायु,गरम जलवायु,समुद्र,वन,रेगिस्तान व अन्य प्राकृतिक चीजों के मिश्रण से बना है। जिसके कारण यहाँ के लोग हर तरह जलवायु में डालने के योग्य थे। इसी प्रवेश द्वार और इसी वैषम्य ने विदेशियों को आकर्षित किया।[7] बौद्ध धर्म का मध्य एशिया में प्रसार उपयुक्त दर्रो से हुआ था ।[8] मध्य युग में यह भारत का विदेशों से व्यापार करने का मार्ग भी था। सिंधु, गंगा के मैदान तीन नदियों से मिलकर बने हैं। सिंधु, गंगा व ब्रह्मपुत्र। मध्यकालीन भारत का यह क्षेत्र उपजाऊ था। भारत का रेगिस्तान व दक्षिणी प्रायद्वीपों भी महत्वपूर्ण भाग है।

भारत विदेशी यात्रियों की दृष्टि से

भारत की भौगोलिक स्थिति के बारे में टैरी ने कहा है कि सिकंदर के आक्रमण के समय से ही गंगा नदी के दोनों ओर का क्षेत्र भारत कहा जाता है। यूरोपीय इसे "इंडिया" कहते हैं। लेकिन अरब क्षेत्र के लोग इसे सिंधु नदी के पूर्वी क्षेत्र को "हिंदोस्तान" कहते हैं।[9] अलग-अलग शासको का क्षेत्र विस्तार भी अलग-अलग क्षेत्र में था। अकबर व जहांगीर का साम्राज्य मुख्यतः खान देश तक सीमित रहा।[10] शासको ने अपने साम्राज्य को विभिन्न प्रांतो में बांट रखा था। मुगल साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति को समझने के लिए "बाबरनामा" व "आईने-ए- अकबरी" आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ है। मुगल सम्राट अपने साम्राज्य को सुचारू रूप से चलने के लिए राज्य को विभिन्न प्रांतो में विभाजित करते थे। टैरी ने प्रांतों की संख्या 37 बताई है।[11] लेकिन डी लायट ने गोलकुंडा व पिरोपीया जोड़कर प्रांतों की संख्या 39 बताई है।[12] लेकिन टैरी व डी लायट द्वारा दिए गए 36 प्रांतों के नाम वही हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है - कंधार, काबुल, मुल्तान, रजाक, बुखारा, थट्टा, सूरत, जैसलमेर, अटक, पंजाब, कश्मीर, जौनपुर, जेनेवा, बांदा, मालवा, चित्तौड़, गुजरात, खानदेश, बरार, ग्वालियर, आगरा, बीकानेर, नगरकोट, गोवा, पाटन, गोंडवाना, जैसलमेर, मेवात, उड़ीसा, दिल्ली, बनकिश, जैसवाल, कान्डवाना व बिहार आदि।[13] 37वा प्रांत टैरी ने इलाहाबाद व डी लायट ने संभाल बताया है। अन्य ऐतिहासिक स्रोतों से हमें पता चलता है कि अकबर के समय 15 प्रांत थे जो इस प्रकार थे इलाहाबाद, आगरा, अजमेर, अहमदाबाद, बिहार, दिल्ली, काबूल, लाहौर, मुल्तान, मालवा, खानदेश, अहमदनगर,[14] इसे हमें पता चलता है कि टैरी व डी लायट ने मुगल साम्राज्य के ऐतिहासिक व धार्मिक स्थान को भी प्रांतों के रूप में बताया है डी

[3] शर्मा, मथुरा लाल, जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1971 पृष्ठ 64

[4] प्रजापत, पप्पू सिंह, प्राचीन भारत, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2021, पृष्ठ 48

[5] शर्मा, मथुरालाल, जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1971, पृष्ठ 62

[6] हसन, इब्न, मुगल साम्राज्य का केंद्रीय ढांचा, अनु. कृपालचंद यादव, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 22

[7] वही, पृष्ठ 23

[8] प्रजापत, पप्पू सिंह, प्राचीन भारत, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2021, पृष्ठ 51

[9] सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1556- 1627, पाठक पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43

[10] मोरलैंड, डब्ल्यू. एच, इंडिया एट द डेथ ऑफ़, दिल्ली, 1990, पृष्ठ 3

[11] टेरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 74-76

[12] डी लायट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 14-15

[13] टेरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 74-84

[14] चरण, परमात्मा, मुगलों का प्रांतीय शासन, मुंबई, 1973, पृष्ठ 69

लायट के अनुसार भारत की पश्चिमी सीमा सिंध नदी थी।[15] भारत के पर्यावरण इतिहास पर लिखने का श्रेय सिर्फ प्राचीन भारत व आधुनिक भारतीय इतिहास को दिया जाता है। लेकिन मध्यकालीन भारत की भौगोलिक व पर्यावरणीय दशा को हमें नहीं भूलना चाहिए क्योंकि मध्यकालीन राज्य नियमित राजस्व और विनियोग में सक्रिय रूप से संकलन थे। क्योंकि राजकीय आय का मुख्य साधन कृषि से प्राप्त राजस्व था। इस क्षेत्र में मध्यकालीन शासको ने भूमि सुधार में अनेक कदम उठाए जैसे नई–नई तकनीक, सिंचाई सुविधा। मध्यकाल में 'खालसा' भूमि केंद्र सरकार के नियंत्रण में होती थी। मुगलों के पास "शिकार– ए– मुकर्रर" थे। गैर कृषि कर भी लगाए गए जिस गैर कृषि भूमि पर राज्य का नियंत्रण बढ़ गया जैसे मारवाड़ के क्षेत्र में लोगों से चराई के मैदानों का उपयोग करने के लिए 'घासमारी' व 'पंचराई' कर लगाए गए। घास की बिक्री पर भी कर लगाए गए। अलाउद्दीन खिलजी ने चराई कर लगाया था। मध्यकालीन शासको ने पेड़ काटने, जानवर हत्या व अन्य प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने वालों के लिए दंड का प्रावधान किया। अकबर ने पशुओं के लिए विशाल पशु शालाएं स्थापित करने के लिए संसाधन जुटाए जिनमें हाथी, घोड़े, ऊंट, गाय, बैल तथा खच्चर रखे जाते थे।[16] जहांगीर ने पशुओं का न केवल अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन किया था अपितु उसने अपने सस्मरणो में अवलोकनों का वर्णन सावधानीपूर्वक किया है। उसने मृत चिड़िया, सांप, मछली का पेट चीर कर दिया देखा कि उसने क्या खाया था।[17] अकबर व जहांगीर के प्रभुत्व वाले अनेक क्षेत्रों में गौवध वर्जित था।[18] मध्यकालीन भारत में एक महान पर्यावरण के संरक्षक का जन्म हुआ जिसे हम गुरु जंभेश्वर के नाम से इतिहास में जानते हैं। वह हमेशा पेड़– पौधों, वन एवं जीव– जंतुओं की रक्षा करने का संदेश देते थे। इसलिए बिश्नोई समाज पर्यावरण से गहरी संवेदना रखता है। यह आंदोलन वनों की कटाई के खिलाफ 1700 ई के आसपास ऋषि समोह जी द्वारा शुरू किया गया था। इस आंदोलन में बिश्नोई समुदाय के 363 लोग मारे गए थे।[19] यह पर्यावरण के प्रति सबसे अनमोल व महत्वपूर्ण योगदान था। गुरु जंभेश्वर जी ने कहा था कि –

"सिर साटे रुख रहे , तो भी सस्तो जान"[20]

मध्यकालीन भारत में प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़, सूखा, भूकंप, महामारी आदि समय–समय पर आती रहती थी। 1619 के आस पास प्लैग महामारी इतनी फैल गई थी कि हर रोज 100 या इसके आस पास लोगों की मृत्यु हो रही थी। रॉयल फिश ने आगरा की भौगोलिक स्थिति के बारे में बताया है कि यह दिल्ली, इलाहाबाद व मालवा प्रांत के मध्य था। वह इसे उपजाऊ तथा मैदानी क्षेत्र बताता है।[21] विलियम फिंच ने आगरा की ओर आने वाले मुख्य मार्गो आगरा शहर तथा किले के बारे में वृतांत दिया है। वह शहर को बड़ा तंग मार्गो तथा विस्तृत बाजार वाला बताता है। उसके अनुसार इस शहर में अमीरों का आवास, तालाब तथा घास के बड़े-बड़े मैदान थे। उसने इस स्थान पर अत्यंत गर्मी को भी लिखा है[22] दिल्ली के बारे में मांसरेट ने बताया है कि यह आगरा से लाहौर मार्ग पर पड़ता है। दिल्ली के एक अन्य प्रांत सोनीपत नगर के बारे में बताया है कि यह छोटा होते हुए व्यापारिक तथा औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था तथा यहां पर शस्त्रों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता था।[23] पंजाब के बारे में विदेशी यात्रियों ने बताया है कि मुगल काल में पंजाब एक महत्वपूर्ण प्रांत था। पंजाब की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि यह स्थान उपजाऊ, मैदानी, पर्वतीय तथा कुछ मरुस्थलीय था।[24] यहां के बाजारों में बहुत भीड़ होती थी। इस बाजार में प्रत्येक चीज उपलब्ध थी। इस स्थान पर गर्मी व बरसात से बचने के लिए प्राय लकड़ी की छत बनाई गई थी।[25] कश्मीर के बारे में पैलशर्ट बताते हैं कि श्रीनगर इसका महत्वपूर्ण भाग है। वह इस स्थान को हरियाली पूर्ण बताते हैं उन्होंने स्पष्ट किया कि यहां के मकान की छत समतल नहीं होती थी।[26] उनके अनुसार यहां अधिकतर मुस्लिम रहते थे। जो शेष भारत से गरीब थे। यहां पर सिलाई वस्त्र उद्योग का काफी विकास बताया गया है। यहां के मूल निवासी अपनी अधिकतर जरूरत के लिए मैदानी क्षेत्र पर निर्भर थे। सूती वस्त्र, काली मिर्च तथा अफीम आगरा से ले जाते थे।[27] बिहार के बारे में राल्फ फिश बताते हैं कि इस स्थान पर सोना पाए जाने तथा कुशलता पूर्वक बिना मशीनों के मिट्टी से सोना अलग करने का विस्तृत वर्णन दिया है।[28] उसने यहां के घास फूस के मैदाने को बताते हुए लिखा है कि किसी भी प्रकार की राजनीतिक बदलाव का इन पर कोई प्रभाव नहीं था। [29]

---

[15] सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1565 – 1627, कैलाश पाठक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43

[16] हबीब, इरफान, मनुष्य और पर्यावरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2018, पृष्ठ 126

[17] वही

[18] वही, पृष्ठ 127

[19] Argavart shodhvikas patrika page no. 251

[20] Research review journals

[21] राल्फ फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ10– 16

[22] विलियम, फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 159– 160

[23] मांसरेट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 152– 153

[24] डी लायट, पूर्वोक्त पृष्ठ 50–52

[25] मांसरेट, वही पृष्ठ 50–52

[26] पैलसर्ट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 33 –35

[27] सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1565 – 1627, कैलाश पाठक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 59

[28] राल्फ फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 23–25

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारत का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित करता था। विशाल पर्वत श्रृंखलाएँ, उपजाऊ मैदान, विस्तृत नदियाँ, और विविध जलवायु ने न केवल यहाँ की कृषि और व्यापार को आकार दिया, बल्कि विदेशी आक्रमणों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और शासकीय नीतियों को भी दिशा दी। विदेशी यात्रियों के विवरणों ने भारत के भूगोल और समाज पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान किए। इस काल में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए, जो तत्कालीन समाज की प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाते हैं। कुल मिलाकर, मध्यकालीन भारत का भूगोल न केवल भौतिक सीमाओं को निर्धारित करता था, बल्कि राज्य निर्माण, सांस्कृतिक विविधता और पर्यावरण संतुलन को भी प्रभावित करता था, जो इस युग की विशिष्ट पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हसन, इब्न, मुगल साम्राज्य का केंद्रीय ढांचा, अनु. कृपालचंद यादव, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 22
2. सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1556- 1627, पाठक पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43
3. शर्मा, मथुरा लाल, जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1971 पृष्ठ 64
4. प्रजापत, पप्पू सिंह, प्राचीन भारत, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2021, पृष्ठ 48
5. शर्मा, मथुरालाल, जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1971, पृष्ठ 62
6. हसन, इब्न, मुगल साम्राज्य का केंद्रीय ढांचा, अनु. कृपालचंद यादव, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 22
7. वही, पृष्ठ 23
8. प्रजापत, पप्पू सिंह, प्राचीन भारत, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2021, पृष्ठ 51
9. सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1556- 1627, पाठक पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43
10. मोरलैंड, डब्ल्यू. एच, इंडिया एट द डेथ ऑफ़, दिल्ली, 1990, पृष्ठ 3
11. टेरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 74-76
12. डी लायट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 14-15
13. टेरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 74-84
14. चरण, परमात्मा, मुगलों का प्रांतीय शासन, मुंबई, 1973, पृष्ठ 69
15. सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1565 – 1627, कैलाश पाठक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 43
16. हबीब, इरफान, मनुष्य और पर्यावरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2018, पृष्ठ 126
17. वही
18. वही, पृष्ठ 127
19. Argavart shodhvikas patrika page no. 251
20. Research review journals
21. राल्फ फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ10- 16
22. विलियम, फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 159- 160
23. मांसरेट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 152- 153
24. डी लायट, पूर्वोक्त पृष्ठ 50-52
25. मांसरेट, वही पृष्ठ 50-52
26. पैलसर्ट, पूर्वोक्त, पृष्ठ 33 -35
27. सिंह, महेंद्र, भारत यूरोपीय यात्रियों की दृष्टि में 1565 – 1627, कैलाश पाठक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ 59
28. राल्फ फिंच, सं विलियम फास्टर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 23-25 वही, पृष्ठ 25-25

[29] वही, पृष्ठ 25-25